SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-01, September- 2024
www.shikshasamvad.com

1857 की क्रान्ति में मुरादाबाद में विद्रोह का दमन व असफलता के कारण

मृदुला शर्मा
शोधार्थिनी
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, (उ0प्र0)

डॉ0 राज कुमार
शोध पर्यवेक्षक
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, (उ0प्र0)

सारांश:

1857 की क्रान्ति देश में स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रथम प्रयास था। इस संघर्ष में देश के रजवाड़े, जमीदार, किसानों व सैनिकों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया था। हिन्दू–मुस्लिम एकता का इस क्रान्ति में उत्कृष्ट रूप देखा गया है। इस संघर्ष में रुहेलखण्ड के अद्‌भुत योगदान के उल्लेख के बिना भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास अधूरा है। रुहेलखण्ड के एक महत्त्वपूर्ण जिला मुरादाबाद 1857 की क्रान्ति का प्रमुख स्थल था। मुरादाबाद पश्चिमी उत्तर प्रदेश का एक प्रसिद्ध जिला तथा रूहेलखण्ड मण्डल का एक प्रमुख भाग है। मुरादाबाद के उत्तर में जिला बिजनौर तथा हिमालय की तराई के क्षेत्र में जिला नैनीताल है। मुरादाबाद के दक्षिण में जिला बदायूँ, पूरब में जिला रामपुर तथा पश्चिम में बुलन्दशहर और मेरठ जिले हैं। यह महानगर रामगंगा नदी के दाहिने पार्श्व में बसा है। रामगंगा नदी के पश्चिमी किनारे पर मुरादाबाद तथा पूर्वी किनारे पर बरेली, उत्तर प्रदेश के उतने ही महत्त्वपूर्ण जिले है जितने कि हुगली नदी के दायी ओर स्थित हावड़ा और बायीं ओर कोलकाता है। बरेली दिल्ली मार्ग पर स्थित होने के कारण राजनीतिक हलचलों में इसका नाम प्रमुख रूप से रहा है। इस आन्दोलन के प्रमुख क्रान्तिकारी मज्जू खाँ, मन्नू खाँ, गुलजार अली, मौलाना बाहाजुद्दीन, शब्बीर अली, किफायत अली इत्यादि थे, जिन्होंने मुरादाबाद की क्रान्ति में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

जब 13 मई, 1857 को मेरठ के विद्रोह का समाचार मुरादाबाद पहुँचा तो उसके बाद मुरादाबाद ने रूहेलखण्ड की विद्रोही आत्मा का नेतृत्व किया। मेरठ विद्रोह के बाद मुरादाबाद की परीक्षा का अवसर आ गया। 1857 में मुरादाबाद 29वीं देशी सेना एवं तोपखाना सेना का गढ़ था। उस समय रूहेलखण्ड के कमिश्नर आर के अलेक्जेण्डर थे तथा मुरादाबाद के जिला मजिस्ट्रेट सी. वी. साण्डर्स तथा ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट जे. जे कैम्पबिल थे। किटचिन डिप्टी कलेक्टर तथा जे क्रॉफ्ट विल्सन जज थे।

मई, 1857 में मेरठ तथा बिजनौर में विद्रोह आरम्भ हो गया था। लोग यह समझने लगे थे कि अंग्रेजी का शासन समाप्त हो चुका है। मुरादाबाद के क्रान्तिकारियों का उत्साह देखते हुए अंग्रेजों ने पलायन करना ही उचित समझा और ब्रिटिश हुकूमत के सिविल व सैन्य अधिकारियों और इलाके के ईसाइयों को अपनी सुरक्षा के लिए मेरठ व नैनीताल में शरण लेनी पड़ी और मुरादाबाद पूर्ण रूप से क्रान्तिकारियों के हाथों में आ गया। मेरठ की क्रान्ति की सूचना पर मुरादाबाद व अमरोहा में भी क्रान्ति की शुरुआत हुई थी।

मेरठ से क्रान्तिकारियों का दल मुरादाबाद की ओर रवाना हुआ और गंगा नदी के किनारे विल्सन ने सेना लेकर इनको रोका, तो घमासान युद्ध हुआ। क्रान्तिकारी पराजित होकर मुजफ्फरनगर की ओर भाग गये। तत्पश्चात् मेरठ के विद्रोहियों ने मुरादाबाद में उत्पात मचाया। उन्होंने जेल के दरवाजे तोड़ दिये और फौजदारी अदालत पर हमला किया। मुरादाबाद के निकटवर्ती क्षेत्र अमरोहा में भी सैयद गुलजार अली ने अपने साथियों के साथ अमरोहा तहसील में आग लगाकर थानेदार और जमींदार की हत्या कर दी। सरकारी खजाना पूरा–का–पूरा लूट लिया। विद्रोही शहर को लूट रहे थे, मुरादाबाद के मजिस्ट्रेट द्वारा रूहेलखण्ड के कमिश्नर को भेजी गयी सूचनाओं के आधार पर रामपुर से 250 जिहादी मौलवी मन्नू खाँ के बुलावे पर आ पहुँचे तथा मौलवी मन्नू के नेतृत्व में मुरादाबाद की छावनी पर आक्रमण किया। इसकी सूचना पाकर विल्सन अपनी 25वीं सेना के साथ रामगंगा नदी पर आ पहुँचा। तत्पश्चात् युद्ध हुआ। युद्ध में मौलवी मन्नू ने वीरगति प्राप्त की। मौलवी मन्नू के पश्चात् मुरादाबाद में क्रान्ति की गतिविधियाँ तेज हो गयी। नवाब मज्जू खाँ ने स्वयं को शासक घोषित कर दिया और सरकारी खजाने की लूट के पश्चात् अग्रेज अधिकारियों की हत्या की योजना बनायी। अंग्रेजों ने डरकर यहाँ से पलायन कर नैनीताल और मेरठ में आश्रय लिया। अंग्रेजों के कहने पर रामपुर के नवाब ने यहाँ अपना अधिकार जमाना चाहा, किन्तु जनरल बख्त खाँ अपनी सेना लेकर रामपुर पहुंच गया, जिससे नवाच को वापस लौटना पड़ा। अत. मज्जू खाँ यहाँ के सर्वेसर्वा बने रहे लेकिन इसका अगला दौर मज्जू खाँ के लिए बड़ा उथल–पुथल भरा रहा।

ऐसी जानकारी थी कि नवाब ने अंग्रेजों का साथ देकर क्रान्तिकारियों का दमन किया। जनता में इससे रोष था, अतः इस तरह अपनी का विश्वासघात पाकर मुरादाबाद में क्रान्ति असफल हुई।

जुलाई, 1857 में यह इलाका शान्त रहा था, लेकिन कुछ ही महीनो में अंग्रेजों ने अपने गंवाये हुए इलाकों पर अधिकार करना आरम्भ कर दिया। क्रान्तिकारियों को देशी–विदेशी ताकतों से एक साथ छिपना पड़ रहा था। अंग्रेजी ने मुरादाबाद में क्रान्ति का दमन बड़ी क्रूरता के साथ किया। यह बात सत्य है कि मुरादाबाद में क्रान्ति का शुभारम्भ जितनी शीघ्रता से हुआ उसका दमन भी उतनी ही तीव्रता से हुआ।

21 अप्रैल, 1858 को अंग्रेजी सेना ने शीघ्र ही जनरल जॉन के नेतृत्व में बिजनौर के क्रान्तिकारियों को परास्त करने के पश्चात् 25 अप्रैल को शीघ्र ही मुरादाबाद पहुँच गयी, ब्रिगेडियर जीस मी मुरादाबाद पहुँचे। इस सेना ने मुरादाबाद को पुनः अपने अधिकार में ले लिया। इसके बाद उसने समस्त शहर की नाकाबन्दी करा दी और घर–घर की तलाशी करायी। जिस सैनिक दस्ते ने मज्जू खाँ के मकान की तलाशी ली, उसका नायक सैयद विलायत हसन था। 26 अप्रैल, 1858 को मज्जू खाँ और उसके साथियों का पता चलने के बाद रुड़की कॉलम के लेफ्टिनेण्ट एजिल्स ने मज्जू खाँ के भवन को घेरकर क्रान्तिकारियों से मुकाबला किया। मज्जू खाँ के कई

साथी मारे गये। मज्जू खाँ, असद अली खाँ, कबीर अली खाँ, साजिद अली खाँ, आबिद अली खाँ तथा शेख अमानत उल्लाह गिरफ्तार हुए। उन पर मुकदमा चला।

27 अप्रैल, 1838 को मुकदमे की कार्यवाही के बाद मज्जू खाँ के अलावा पाँच क्रान्तिकारियों को सुवह फाँसी दे दी गयी और मज्जू खाँ को उस दिन शाम पांच बजे गोली मारकर कोतवाली में लटका दिया गया, ताकि लोगों को उसकी मौत का पता चल जाये। 30 अप्रैल को रूहेलखण्ड के आयुक्त आर अलेक्जेण्डर व नवाब रामपुर, मुरादाबाद आये और मुरादाबाद पर अंग्रेजों का पुनः अधिकार हो गया, विलायत हुसैन खाँ को डिप्टी कलेक्टर बनाया गया एव विल्सन स्पेशल कमिश्नर नियुक्त हुए। विल्सन के साथ प्रथम पजाब इन्फैण्ट्री के सैनिक थे। विल्सन ने क्रान्ति का दमन बड़ी क्रूरता के साथ किया। गाँव–गाँव सेना घूमी, खोज–खोजकर क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार किया गया। अमरोहा तथा मुरादाबाद को चारों ओर से क्रान्तिकारियों की तलाशी ली गयी। कई हजार व्यक्ति गिरफ्तार हुए। अधिकांश को मृत्युदण्ड दिया गया। मुरादाबाद नगर में जिस स्थान पर मृत्युदण्ड दिया गया, उसका नाम गलशहीद है अर्थात् शहीदों की गली'। इसके अलावा अंग्रेजों ने चार और फासीधर बनवायें–

1. जिगरगिर पार्क गलशहीद।
2. कचहरी के पास।
3. जेल के पीछे।
4. शाहबुलाशा की जारात के पास।

अंग्रेजों ने उन व्यक्तियों को जो अंग्रेजों के खिलाफ थे, के गले काट–काटकर इमली के पेड़ पर टांग दिये। इसलिए इस मोहल्ले का नाम कटरा गलशहीद पड़ा। बुलाशा की सादात के पास तोपखाना लगाया गया तथा दो को फाँसी पर चढ़ाया गया। काफी क्रान्तिकारियों को मारकर रामगंगा में बहा दिया गया।

अग्रेजों की जीत की खुशी में शहर में दीये जलाये गये। अंग्रेजों ने मुरादाबाद का शासन रामपुर के नवाब को सौंप दिया। 2 मई को जनरल जोन्स मुरादाबाद को रामपुर के नवाब के हवाले करने के बाद बरेली की तरफ रवाना हो गया। इस दिन मज्जू खाँ का प्राइवेट सेक्रेटरी हाजिब खाँ पकड़ा गया। इनको जेल में कैद कर दिया गया। शहर मुरादाबाद में क्रान्तिकारियों की सरगर्मियों समाप्त हो गयी थी।

यद्यपि यहाँ विप्लव शीघ्रता के साथ फैला और अनेक स्थानों पर जनता द्वारा विरोध प्रदर्शित किया गया परन्तु जितनी शीघ्रता से इसका प्रस्फुटन फैला व हुआ, उतनी ही शीघ्रता से यह असफल भी हो गया। यह एक आश्चर्यजनक घटना थी। यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि व्यापक रूप से फैली इस क्रान्ति का पतन अन्ततः कैसे हुआ? वस्तुतः इसकी असफलता के अनेक राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर के कारण थे, जिनका प्रभाव प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से इस क्षेत्र विशेष पर पड़ा। इतना सब भारतीयों के घर में होने के बावजूद मी भारतीयों को असफलता क्यों प्राप्त हुई, इसकी मीमासा कई प्रकार से की जाती है।

वैसे तो विद्रोह की असफलता के विभिन्न कारण बताये जाते है, लेकिन मुरादाबाद की क्रान्ति की असफलता का मुख्य कारण रामपुर के नवाब का अंग्रेजों का साथ देना था। रामपुर का नवाब अंग्रेजों का विश्वसनीय बना रहा और उनकी सहायता की। आश्चर्यजनक तथ्य यह भी है कि जहाँ एक और सीमावर्ती जिले बरेली, बदायूँ, मुरादाबाद, शाहजहाँपुर आदि क्रान्ति की आग में धधक रहे थे। ऐसे समय में इनके मध्य में स्थित होने के बावजूद नवाब ने अंग्रेजों का साथ देने का साहस किया। यदि ऐसा न हुआ होता तो सम्भवतः आज रूहेलखण्ड का

इतिहास कुछ और ही बयाँ कर रहा होता। विद्रोह का दमन करने के लिए अंग्रेजी सरकार, रसद, यातायात, पैसा और हर जरूरत के लिए रामपुर राज्य पर निर्भर थी। यदि रामपुर राज्य अंग्रेजों के प्रति नम्र न होता तो अग्रेजों को रुहेलखण्ड के किसी भी स्थान पर आश्रय मिलना मुश्किल होता। रामपुर की सेना ने विभिन्न स्थानों पर विद्रोहियों का दमन करने में अंग्रेजी का साथ दिया।

कभी भी क्रान्ति, युद्ध अथवा आन्दोलन करने के लिए कुशल नेतृत्व की अत्यन्त आवश्यकता होती है। जहाँ कुशल नेतृत्व होगा, वहीं विजय की सम्भावना अधिक होगी। इस विद्रोह की असफलता का मुख्य कारण यह भी था कि मुरादाबाद में कुशल नेतृत्व का अभाव था। विदोह का संचालन किसी एक व्यक्ति के हाथ में नहीं था। ऐसा होता तो रुहेलखण्ड तथा निकटवर्ती क्षेत्रों में क्रान्ति का संचालन आसानी से किया जा सकता था, लेकिन ऐसा नहीं हो सका और सम्पूर्ण उत्तर भारत पर प्रभाव रखने वाला नेता नहीं था, तो क्षेत्रीय नेता ही सफलतापूर्वक कार्य कर सकते थे। परन्तु क्षेत्रीय नेतृत्व भी वैसा था जैसा केन्द्रीय। बहादुर शाह को दिल्ली की बागडोर सौप दी गयी पर वह 80 वर्ष के व्यक्ति थे। उनमें विद्रोह का अग्रणी बनने की न तो क्षमता थी और न ही योग्यता।

विद्रोह की असफलता के मुख्य कारर्णा में से एक कारण इस विद्रोह के संचालन के लिए कोई मी भारतीयों की निश्चित योजना नहीं थी। उसका योजनाबद्ध न होना तथा अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग समय में प्रस्फुटित होना विद्रोह की असफलता का मुख्य कारण रहा। 1857 के विद्रोह का आरम्भ न तो निश्चित योजना के फलस्वरूप हुआ और न ही इसकी प्रगति के दौरान कोई निश्चित योजना तैयार की गयी। क्रान्ति निश्चित तिथि 31 मई को निर्धारित की गई, परन्तु क्रान्ति समय–पूर्व आरम्भ हो गयी। बरेली के क्रान्तिकारी नेता खान बहादुर ने मी रुहेलखण्ड मण्डल में भी 31 मई से पहले क्रान्ति न करने की सलाह दी थी, किन्तु मेरठ की सूचना पर रूहेलखण्ड में भी समय से पूर्व क्रान्ति की शुरूआत हो गयी।

क्रान्तिकारियों में राष्ट्रीय जागृति का स्पष्टतः प्राय. अभाव था, विद्रोह में उनकी भागीदारी के कारण मिन्न–भिन्न थे।

विद्रोह में भारतीयों के मुकाबले अग्रेजों के पास अच्छे अस्त्र–शस्त्र का होना उनकी सफलता का कारण था। अंग्रेजी सेना ने नई एनफील्ड रायफल का प्रयोग किया, जिससे कारतूस चलाना बहुत आसान था। इसके विपरीत क्रान्तिकारी तलवार और भालों से युद्ध कर रहे थे। क्रान्तिकारियों के पास हमेशा रसद और गोला–बारूद की कमी रही।

जिला मुरादाबाद में भी क्रान्तिकारियों की असफलता के कारण दूसरे जिलों से अलग नहीं थे। स्थानीय कारण भी अनेक थे, यथा– मेरठ में क्रान्ति के प्रारम्भ की सूचना जैसे ही मुरादाबाद आयी, यहाँ के गुर्जरों ने 15 मई, 1857 ई. को अग्रेजों के विरुद्ध बगावत प्रारम्भ कर दी। सैयद गुलजार अली ने स्वयं को मुरादाबाद का हाकिम घोषित कर दिया था। 14 जून, 1857 ई. को बख्त खों के नेतृत्व में बरेली की सेनाओं ने मुरादाबाद में प्रवेश किया। 29 जून को रामपुर की सैनिक टुकड़ी ने मुरादाबाद पर अधिकार करने की कोशिश की, लेकिन वे सफल नहीं हो सके।

15 जून. 1857 ई. को संभल के पठान व अंसारियों ने विद्रोह कर दिया। दिल्ली के शहजादे फिरोजशाह ने सम्भल, मुरादाबाद की ओर कूच किया। पहले वह मुरादाबाद आया और फिर बरेली चला गया। मज्जू खाँ ने शाही शहजादों एवं सेना की मदद से यहाँ देशी राज्य कायम रखा, लेकिन दिल्ली एवं लखनऊ के पतन के बाद

अंग्रेज सेनाओं द्वारा आक्रमण किये जाने पर मज्जू खाँ उनका मुकाबला नहीं कर सका। कर्नल जे. काक तथा आर अलेक्जेण्डर के नेतृत्व में अंग्रेजी सेनाओं द्वारा वह पकड़ा गया और मारा गया। दोनों शहजादे भी अन्य लोगों के साथ गिरफ्तार कर लिये गये तथा जान से मार दिये गये। मुरादाबाद पर भी अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया। यद्यपि क्रान्तिकारियों में वीरता की कमी नहीं थी, परन्तु उनमें अनुभव, संगठन तथा साथ मिलकर कार्य करने की कमी थी। छापा मारने अथवा सहसा आक्रमण करने से लुप्त स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती थी। विद्रोह के समाप्त होने के पश्चात जो अनेक आयोग और जाँच समितियाँ नियुक्त की गयीं, उनमें से किसी को भी विद्रोह के पीछे योजनाबद्ध कार्यक्रम के प्रमाण नहीं मिले। बहादुर शाह द्वितीय के अभियोग ने तो यह भी सिद्ध कर दिया कि यह विद्रोह उसके लिए उतना ही आकस्मिक था जितना अग्रेजों के लिए।

अनेक स्थानीय कारणों में क्रान्तिकारी न मैदानी जंग में सफल हुए और न गोरिल्ला युद्ध में। अगर शहजादा फिरोजशाह की सेनायें गोरिल्ला आक्रमणों की तरह पाँच–छः अतिरिक्त सैनिक दस्ते अंग्रेजी ठिकानों पर अचानक छापे मारते रहते तो अधिक सफलता मिलती क्योंकि युद्ध सामग्री का अभाव अनुशासन तथा आपसी मतभेदों के कारण, अंग्रेजी प्रशिक्षित सेना की तुलना में विजय असम्भव थी। अंग्रेजों की गुप्तचर व्यवस्था अत्यधिक शक्तिशाली थी, जिसका कोई तोड़ क्रान्तिकारियों के पास नहीं था।

शोध से ऐसे भी उदाहरण सामने आये है कि एक ही परिवार के दो परस्पर प्रतिद्वन्द्वियों में से यदि एक ने क्रान्ति में भाग लिया तो दूसरा उसका विरोध करने के उद्देश्य से क्रान्ति के विरोधी कार्य में हिस्सेदारी करने लगा। इस विद्रोह का फैलाव सम्पूर्ण भारत में ही नहीं हुआ था। गुजरात, मध्य भारत व बंगाल भी इस विद्रोह में सम्मिलित नहीं हुए। यह विद्रोह मात्र दिल्ली, अवध, बिहार, रुहेलखण्ड और इसके निकटस्थ भागों में फैल सका था। सीमित होने के कारण विद्रोह का दमन करने में अंग्रेजों को अपनी शक्ति सम्पूर्ण भारत में नहीं बिखेरनी पड़ी। इससे अंग्रेज प्रबल बने रहे और क्रान्तिकारी इस विद्रोह में असफल हो गये।

इन बातों के अलावा क्रान्तिकारियों को एक समय में दो शत्रुओं से मुकाबला करना पड़ा अंग्रेज तथा नवाब रियासत रामपुर। नवाब रामपुर की अंग्रेजों से वफादारी तथा उनकी आर्थिक और सैनिक सहायता ने क्रान्तिकारियों की कमर तोड़ दी और भागे हुए अंग्रेजों ने कदम जमा लिये। यदि सूबेदार बख्त खाँ दिल्ली चलो की बजाय रूहेलखण्ड की जंगे आजादी के रुहेलखण्ड में शाह जफर के नाजिम (प्रशासक) नवाब खान बहादुर के साथ मिलकर रामपुर पर अधिकार कर लेते तो जगे आजादी की कहानी कुछ और हो सकती थी। रामपुर पर अधिकार करने के बाद नैनीताल में सैनिक तथा सिविल अंग्रेज अधिकारियों की सहायता बन्द हो जाती, जिससे उनकी ताकत को धक्का लगता। उनकी योजनाये बनना समाप्त हो जाती और वह नैनीताल में घिर जाते तथा गिरफ्तार हो जाते तथा जनरल जोन्स का रामपुर की ओर से बरेली की ओर आवागमन रुक जाता। सूबेदार बख्त खाँ का दिल्ली जाना और इन सबके अलावा एक बड़ी भूल रामपुर पर अधिकार न करने का फैसला थी, जिससे रूहेलखण्ड की आजादी को धक्का लगा।

मुरादाबाद व निकटस्थ क्षेत्रों में विद्रोह की असफलता का एक अन्य गौण कारण दिल्ली का पतन भी रहा। 21 दिसम्बर, 1857 को बादशाह बहादुर शाह जफर ने हडसन के समक्ष आत्म–समर्पण कर दिया था।

इस प्रकार विद्रोह का सीमित होना एवं संगठित न होना अधिकांश, जनता का तटस्थ रहना, कान्तिकारियों के उद्देश्य का एक न होना. सभी स्थानों पर विद्रोह का एक साथ प्रस्फुटित न होना, दिल्ली का शीघ्र पतन होना व

कान्तिकारियों, नेताओं द्वारा स्थानीय जनता का उचित नेतृत्व न कर पाना आदि अनेक ऐसे कारण थे, जिसके कारण विप्लवकारी सफलता प्राप्त नहीं कर सके।

सैनिकों के आचरण के साथ–साथ विद्रोहियों ने इस विदोह के दौरान सैनिक योजना को भी नहीं अपनाया। यदि योजनाबद्ध तरीके से रूहेलखण्ड मण्डल के सभी जनपदों का एक साथ विद्रोह होता तो परिणाम कुछ और ही होता, क्योकि क्रान्तिकारियों को सफलता नहीं मिली। इसीलिए इसके बारे में सिर्फ अनुमान ही लगाया जा सकता है कि अगर वे सफल हो जाते तो इतिहास की दशा क्या होती? यद्यपि यह विप्लव अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका। परन्तु अपनी विफलता में भी इसने महान उद्देश्य की पूर्ति की। यह उस राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रेरणास्रोत बन गया, जिसने वह हासिल कर दिखाया, जिसे विप्लव प्राप्त नहीं कर सका।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जे. सी. विल्सन नेरेटिव्स ऑफ आउट बैंक ऑफ डिस्टर्वेन्सेज एण्ड रेस्टोरेशन ऑफ ऑधिरिटी इन मुरादाबाद, पृ. 103
2. ई. वी. जोशी उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर मुरादाबाद प्रकाशन, उत्तर प्रदेश सरकार, पृ.54
3. जे. सी. विल्सन म्यूटिनी एण्ड रिवेलियन इन द डिस्ट्रिक ऑफ मुरादाबाद, पार्ट 1. पृ. 29
4. नरेटिव ऑफ व आउटबेक ऑफ डिस्टरवेन्सस एण्ड रेस्टोरेशन ऑफ अथोरिटी एट मुरादाबाद ईयर 1857–58. पैरा 3 (जे. सी. विल्सन, कमिश्नर का जे. एफ. इंडेमन्सतान सोमती का 29 दिसम्बर, 1858 का पत्र राष्ट्रीय अभिलेखागार, लखनऊ में उपलब्ध)।
5. ए. कनिंघम आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, Vol. 1. पृ. 255
6. पी. सी. जोशीः रिवेलियन ऑफ 1857. पृ. 92
7. एस. ए. ए. रिजवी फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश, Vol. 5. अध्याय 6. पृ. 284
8. बायोग्रेफिकल स्टडी ऑफ द हीरोज ऑफ 1857 इन रुहेलखण्ड शोध पत्र, डॉ. जोगा सिंह होठी।
9. पो. उदय प्रकाश अरोरा भारतीय स्वतन्त्रता का महासंग्राम व सहेलखण्ड, पृ. 63
10. जेबा लतीफ रुहेलखण्ड 1857 में, पृ. 31
11. डा. मो. अयूब कादरी जगे आजादी 1857. 9. 149
12. मोईनुद्दीन, हसन गदर 1837, पृ 16
13. कुर्मन्दु शिशिर 1857 की राजक्रान्ति विचार और विश्लेषण, पृ. 142
14. प्रतापचन्द्र आजाद 1857 की राज्यक्रान्ति, रूहेलखण्ड, पृ. 48– 50
15. कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर उ. प्र. स्वाधीनता संग्राम की एक झाँकी, लखनऊ, पृ. 99
16. एच. पी. चट्टोपाध्याय द स्पाई म्यूटिनी 1857–59, पृ. 169
17. डॉ. आभा सक्सेना रूहेलखण्ड के मुस्लिमों का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान, शोध–ग्रन्थ।
18. डॉ. बीना जायसवाल रूहेलखण्ड में 1857 का विदोह–शोध ग्रन्थ।
19. टी आर होम्स हिस्ट्री ऑफ इण्डियन म्यूटिनी, पृ. 137
20. ई. ए. रीड : ओरिजनल टेलीग्राम (30 अप्रैल, 1858 सेकेटीयर्स रिकॉर्ड रूम, लखनऊ)।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-01, Sept.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Sept-2024/08

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

मृदुला शर्मा और डॉ0 राज कुमार

For publication of research paper title

"1857 की क्रान्ति में मुरादाबाद में विद्रोह का दमन व असफलता के कारण"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-01, Month September, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com